Subject:- History Hons
Degree Part I (Hons)
Paper - II
Lecture No - 31

Dr. Hem Narayan Mahto
Deptt of History
9835007357
Date - 28.4.2020

Ques:- पूँजीवाद से आप क्या समझते हैं? यूरोप में पूँजीवाद के विकास का इतिहास विवरण दीजिए।

Ans:- आधुनिक युग की एक प्रमुख विशेषता पूँजीवाद का विकास है। 16वीं शताब्दी में यूरोप का विस्तार हुआ जिसने यूरोप में पूँजीवाद के विकास में योगदान किया। जे० एन० हॉब्सन के शब्दों में - "पूँजीवाद एक औद्योगिक संगठन है जिसमें नियोक्ताओं की एक कम्पनी या एक नियोक्ता जिसके पास धन है, जिससे वह कच्चे मालों व उपकरणों को प्राप्त करता है; तथा श्रम लगाता है, मुनाफा के लिए वृहत पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करता है।"

"Capitalism has been defined as the organisation of business upon a large scale by an ~~accumulated~~ employer of Company of employees possessing an accumulated stock of wealth where with to acquire raw materials and tools and hire Labour, so as to produce an increased quantity of wealth which shall constitute Profit."

प्राचीन काल में यूनान और रोम में पूँजीवाद का जन्म हो चुका था, किन्तु रोमन साम्राज्य के पतन के बाद इसका भी अन्त हो गया। मध्ययुग में यूरोपीय अर्थ-व्यवस्था पूँजीवादी नहीं थी। प्रत्येक समुदाय आत्मनिर्भर था, वस्तुओं का वृहत पैमाने पर उत्पादन नहीं होता था। जितना उत्पादन होता था उतना ही उपभोग होता था। बचत न तो संभव होता था और न बचाया ही जाता था। कृषि मैनर (Manorial) पद्धति तथा व्यापार-व्यवसाय

श्रेणी (guild) पद्धति से संचालित थे। वे दोनों एक दूसरे के सहयोगी थे। मुनाफा कमाना धार्मिक दृष्टि से देखा जाता था तथा होमन चर्च सूदखोरी अनैतिक और अधार्मिक बताती थी। आर्थिक क्रियाकलाप नैतिक सिद्धान्तों से प्रभावित थे, इन परिस्थितियों में पूँजीवाद का उदय संभव नहीं था।

15वीं सदी के अंतिम दशकों में यूरोप में एक नयी अर्थव्यवस्था का उदय हुआ, जिसे पूँजीवाद की संज्ञा दी गयी है। कई कारणों से सामन्ती व्यवस्था का अन्त हो गया तथा उसका स्थान पूँजीवादी व्यवस्था ने ले लिया।

पूँजीवाद एक विशिष्ट प्रकार की आर्थिक प्रणाली थी जो मुख्यतः वाणिज्यिक क्रांति की उपज थी। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों, भूमि, श्रम, पूँजी एवं प्रबंध पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता था। प्रो० पीगू के अनुसार -"पूँजीवादी उद्योग वह है जिसमें उत्पादन के भौतिक साधनों पर निजी स्वामित्व होता है, या जो निजी व्यक्तियों द्वारा किराये पर लिये जाते हैं और उनके आदेशानुसार इस उद्देश्य से संचालित किए जाते हैं कि वे जिन वस्तुओं या सेवाओं के उत्पन्न करने में सहायक होते हैं, उन्हें मुनाफे पर बेचा जा सके।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होता है।

(1) निजी सम्पत्ति :- पूँजीवाद के अन्तर्गत सम्पत्ति का निजी स्वामित्व होता है, उत्पादन के साधनों, भूमि, पूँजी, श्रम आदि पर व्यक्तिगत अधिकार होता है। कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह कानूनी तरीके के अन्तर्गत साधनों का प्रयोग निजी लाभ के लिए करने में स्वतंत्र होता है। इस व्यवस्था में सरकार द्वारा निजी सम्पत्ति के अधिकार की रक्षा की जाती है।

(2) व्यक्तिगत लाभ एवं निजी प्रेरणा :- प्रो० कोल ने सत्य ही कहा है कि सम्भावित मुनाफा वह धुरी है जिस पर

सारी पूँजीवादी व्यवस्था चलती है। पूँजीवाद में निजी लाभ की प्रधानता होती है। समाज कल्याण पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। व्यक्तिगत लाभ की भावना से ही निजी प्रेरणा का जन्म होता है तथा उत्पादन में साहस एवं जोखिम उठाने जैसे कार्यों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

(3) अनियोजित अर्थव्यवस्था! – पूँजीवादी व्यवस्था में कोई केन्द्रीय आर्थिक नियोजन नहीं होता जिसके फलस्वरूप अर्थतंत्र में समन्वय का अभाव होता है, पृथक-पृथक औद्योगिक इकाई के द्वारा भिन्न-भिन्न निर्णय लिये जाते हैं। मूल्य तंत्र (Price Mechanism) के द्वारा ही अर्थतंत्र की सारी गतिविधियाँ उपभोग, वितरण, बचत आदि संचालित होती हैं। उपभोक्ताओं द्वारा अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति वस्तुओं की माँग के रूप में की जाती है, जिससे मूल्य प्रभावित होते हैं। अतएव पूँजीवादी व्यवस्था को मूल्य द्वारा शासित प्रणाली की संज्ञा दी जाती है।

(4) उद्यम की स्वतन्त्रता! – पूँजीवादी प्रणाली में उद्योगपतियों, मजदूरों एवं उपभोक्ताओं आदि को स्वतंत्रता रहती है। उपभोक्ता अपनी इच्छानुसार वस्तुओं को क्रय पर अपनी आय का भाग खर्च करते हैं, श्रमिकों को अपनी योग्यतानुसार व्यवसाय चयन का अधिकार होता है। इस पद्धति में आर्थिक क्षेत्र में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता तथा लोगों को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। परन्तु आधुनिक काल में अधिकांश देशों में सामाजिक हितों को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत उद्यम की स्वतन्त्रता प्रतिबंधित की गयी।

(5) वर्ग संघर्ष! – पूँजीवादी व्यवस्था में वर्ग-संघर्ष का जन्म होता है। आय का अधिकांश भाग कुछ व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित हो जाता है तथा मजदूरों को उसका अल्प भाग ही प्राप्त होता है। अतएव आय के वितरण में उत्पन्न विषमता के कारण समाज सम्पन्न एवं विपन्न दो भागों में बँट जाता है। दोनों वर्गों में वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Scanned with CamScanner

(6) प्रतियोगिता :- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रतिस्पर्द्धा पर आधारित होती है। यह आर्थिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है, इस प्रणाली में क्रेता तथा विक्रेता के बीच, मालिक तथा मजदूरों के बीच एवं विभिन्न उत्पादकों में परस्पर प्रतियोगिता होती है। प्रतियोगिता के कारण मूल्यों में अधिक वृद्धि नहीं हो पाती तथा उपभोक्ताओं को उचित कीमत पर वस्तुएँ एवं सेवाएं प्राप्त होती है। स्वस्थ प्रतियोगिता के कारण उत्पादन में कार्य कुशलता आती है। परन्तु वर्तमान पूँजीवादी तंत्र में ऐसा देखने को नहीं मिलता। अर्थव्यवस्था की गलाघोंट प्रतियोगिता से बचने के लिए उत्पादकों द्वारा सम्मिश्रण एवं एकीकरण का सहारा लिया जाता है।

यूरोप में पूँजीवाद का विकास :- 12वीं सदी तक यूरोपीय राज्यों में सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत ~~यूरोपीय राज्यों~~ वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन स्थानीय उपभोग एवं निर्वाह मात्र के लिए होता था। सामन्तों की विलासिता एवं प्रदर्शन की प्रवृत्तियों से व्यवसाय एवं वाणिज्य में कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी तथा अर्थव्यवस्था जड़ता का शिकार हो गया। सामन्ती व्यवस्था पूँजीवाद की ओर अग्रसर होने लगी। इसके फलस्वरूप धन का निवेश लाभ प्राप्त करने तथा पुनर्निवेश के लिए होने लगा। इस प्रकार निवेशित किये जाने वाले धन को पूँजी की संज्ञा दी गयी, समाज में एक समृद्ध एवं जागरूक मध्यम वर्ग का उदय हुआ।

पूँजीवाद के विकास ने मूल्य वृद्धि को प्रभावित किया। इससे मुद्रा में वृद्धि हुई। 16वीं सदी के मध्य तक वस्तुओं व श्रम का मूल्य चाँदी और स्वर्ण के संदर्भ में अपेक्षाकृत स्थायी था। इसके बाद जब अमेरिका से पर्याप्त मात्रा में चाँदी-सोना स्पेन आने लगा तथा उन्हें दूसरे देशों में निर्यात किया जाने लगा तो मूल्यों में स्थिरता नहीं रही। 1500 से 1650 ई० के बीच यूरोप की कुल मुद्रा आपूर्ति पहले की अपेक्षा तिगुनी से अधिक हो गई तथा इस अवधि में वस्तुओं के मूल्य व मजदूरी में भी तीव्र वृद्धि हुई।

Scanned with CamScanner

पूँजीवाद के विकास के फलस्वरूप यूरोप की परम्परागत सामाजिक परिस्थितियाँ व संस्थाएँ प्रभावित हुईं। 1500 ई० के पहले ही मध्ययुगीन सामाजिक ढाँचा बदलने लगा। कृषि और भेनर पद्धति काफी प्रभावित हुई। यह नई पूँजीवादी पद्धति किसानों की कमर तोड़ रही थी। इस नई पूँजीवादी पद्धति ने इंग्लैंड में घेरेबन्दी प्रथा को जन्म दिया। घेरेबन्दी प्रथा से अनेक कृषि मजदूर बेकार हो गए क्योंकि भेड़ पालने के लिए कम गड़ेरियों की जरूरत पड़ती थी। बेकार कृषि मजदूर अपनी जीविका की खोज में शहरों की ओर दौड़ पड़े। वे कम मजदूरी पर भी अपना श्रम बेचने के लिए तैयार थे।

पूँजीवाद ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। अब तक मध्ययुगीन श्रेणियों (Guilds) का अन्त हो चुका था। ये श्रेणियाँ स्थानीय थी तथा बहुत कम मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करती थी। समाज में बिचौलियों का जन्म हो चुका था। वे कच्चा माल खरीदकर इसे शिल्पियों को देने लगे। बिचौलिए इस निर्मित वस्तु को बेचने लगे।

इस तरह इस व्यवस्था के अन्तर्गत बिचौलिया या नियोक्ता अपना उत्पादन बढ़ाने लगा। वह कृषिदासों तथा उनके परिवार से कम मजदूरी पर काम लेने लगा। इस तरह वह लाभ कमाने लगा तथा अपनी पूँजी बढ़ाने लगा। वह कृषिदासों तथा उनके परिवार से कम मजदूरी पर काम लेने लगा। इस तरह वह लाभ कमाने लगा तथा अपनी पूँजी बढ़ाने लगा। इस प्रकार पूँजीवाद का जन्म हुआ। पूँजीपति मजदूरों का आर्थिक शोषण कर अपनी तिजोरी भरने लगे।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul

Scanned with CamScanner